: प्रथम अध्याय :

हिमांशु जोशी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

: प्रथम अध्याय :

1. 'हिमांशु जोशी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

1.1 व्यक्तित्व :-

1.1.1 जन्म और बाल्यावस्था।

1.1.2 माता-पिता।

1.1.3 परिवार।

1.1.4 शिक्षा- दीक्षा और नौकरी।

1.1.5 शौक, इच्छाएँ एवं प्रवास।

1.1.6 प्रभाव ।

1.2 कृतित्व :-

1.2.1 कविता संग्रह ।

1.2.2 कहानी संग्रह ।

1.2.3 उपन्यास साहित्य ।

1.2.4 नाटक साहित्य ।

1.2.5 बाल मासिक पत्र।

1.2.6 बाल साहित्य ।

1.2.7 यात्रा वर्णन साहित्य।

1.2.8 संकलन साहित्य।

1.2.9 संपादित साहित्य ।

1.2.10 अन्य रचनाएँ ।

1.2.11 अनूदित एवं अनुवाद ।

1.2.12 टी. वी. धारावाहिक ।

1.2.13 फिल्म ।

1.2.14 पत्रकारिता ।

1.2.15 पुरस्कार ।

1.2.1.6 भूषित पदों का विवेचन।

1.3 हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यासों का सामान्य परिचय।

1.3.1 अरण्य ।

1.3.2 कगार की आग ।

निष्कर्ष ।

किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व को जाने बिना उसके साहित्य का अध्ययन अधूरा होता है। व्यक्तित्व का प्रभाव उसके कृतित्व पर कितना है यह जानने के लिए परिवेश तथा कृतित्व का अध्ययन आवश्यक है। अत: हिमांशु जोशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय निम्न प्रकार से -

1.1 व्यक्तित्व :-

हिमांशु जोशी एक बहुचर्चित विविध आयामी साहित्यकार हैं जिनकी साहित्यिक कृतियों में यथार्थ बोध मिलता है। वे समकालीन साहित्य के अग्रणी कथाकार हैं। उनकी मौलिक आँचलिक रचना 'कगार की आग' आज आस्ट्रेलिया में अध्ययन के लिए रखी गयी है। अत: उनके बचपन से लेकर अब तक के जीवन का परिचय तथा परिवेश को जानना क्रमप्राप्त होता है।

1.1.1 जन्म तथा बाल्यावस्था :-

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय अंचल तथा अल्मोड़ा जिले के ज्योस्यूड़ा नामक गाँव में 4 मई, सन 1935 ई. में हिमांशु जोशी जी का जन्म हुआ। जन्म तो ज्योस्यूड़ा में हुआ, लेकिन सारा बचपन 'खेतीखान' नामक छोटे कस्बे में बीता। खेतीखान ज्योस्यूड़ा से लगभग तीन मील दूरी पर है। ज्योस्यूड़ा को 'जोशियों का गाँव' कहा जाता है। खेतीखान में मिडिल स्कूल तक शिक्षा व्यवस्था थी। गाँव में खेती थी और थोड़ा व्यापार भी था। ''बचपन में जाड़ों में पानी जम जाने के कारण बर्फ को आँच पर पिघला कर पानी बनाकर पीते थे।''[1] उनके कथन से स्पष्ट होता है कि जोशी जी का बचपन आर्थिक दृष्टि से संपन्न परिवार में गुजरा है। ''पिताजी के जेल-यात्राओं का कुछ प्रभाव तो घर के कामों में पड़ता था, किंतु बहुत बड़ा आर्थिक संकट नहीं झेलना पड़ता था।''[2]

बचपन से उन्हें चित्रकला का भी शौक है। बचपन में कुछ बन दिखाने का सपना था। 'शांतिनिकेतन' में पढ़ने की इच्छा थी। अभिनय, चित्रकारिता तथा नाटकों में भाग लेना पसंद करते थे। बचपन में उन्होंने कई पुरस्कार प्राप्त किये हैं। ''बचपन में ही साहित्य साधना का बीजारोपन हुआ था। अक्षर ज्ञान के प्रारंभ में पाठशाला में गला फाड़-फाड़कर दो-दुनी चार का पहाड़ा चीखते हुए दोहराते थे।''[3]

1.2.2 माता-पिता :-

जोशी जी के पिता का नाम पूर्णानंद और माता का नाम तुलसीदेवी था। पिता देशभक्त थे। इसीकारण उनकी जेल-यात्राएँ होती रहती थी। उनके पिता स्वाधीनता संग्राम से सक्रिय रूप से जुड़े हुए एक स्वातंत्र्य सेनानी थे। समाज में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान था क्योंकि वे स्वातंत्र्य सेनानी के साथ-साथ उदार हृदय व्यक्ति भी थे। ''जितना कुछ बन सकता था, सब जरूरतमंदों की सहायता करते थे।''[4] उनका सारा जीवन देशसेवा में व्यतीत हुआ। हिमांशु जोशी के बाल्याकाल में ही सन 1941 ई. में. पिताजी का कानपुर में देहांत हुआ। जोशी जी के मतानुसार - ''वे स्वाधीनता संग्राम में थे। गांधीजी का अलख जगाते- जगाते वे स्वयं ही चिरनिद्रा में लिन हो गए कहीं।''[5] पिताजी की मृत्यु के समय जोशी जी सात साल के थे। इसी कारण वे बचपन में ही पितृ-प्रेम से वंचित हो गए। माता तुलसीदेवी अनपढ़ थी, लेकिन पति की मृत्यु के बाद चालीस साल तक बच्चों की अविरत सेवा की। सन 1986 ई. में उनकी माताजी का देहांत हुआ।

1.1.3 परिवार :-

जोशी जी तीन बहनों के इकलौते भाई थे। वे जन्मत: भातृ-प्रेम से वंचित हैं। उनका परिवार आर्थिक दृष्टि से संपन्न था। ''वे संयुक्त परिवार में रहनेवाले थे। इसी कारण भरण-पोषण ठीक ढंग से चलता था। बाद में कुछ कठिनाइयों के कारण कारोबार शिथिल हो गया।''[6] दायित्व बढ़ने लगा और आय के साधन सीमित होने लगे। संघर्ष का बढ़ना आरंभ हो गया। ज्योस्यूड़ा के अतिरिक्त अनेक गाँवों में पुश्तैनी जायदाद थी। पिता स्वातंत्र्य सेनानी होने के कारण कई बार जेल जा चुके थे। इसी कारण परिवार पर अनेक संकटों के बादल छायें। पिताजी की मृत्यु के बाद अनेक जिम्मेदारियाँ बढ़ती गयी। इसी में जोशी जी का विवाह हुआ, तब उनकी उम्र अठारह वर्ष की थी। पहले छोटे परिवार में तीन बेटों और पत्नी के साथ रहते थे। आज उनके दो बेटे नॉर्वे में सांसारिक जीवन बीता रहे हैं। उनके तीन बेटे हैं (1) अमित, (2) सिद्धार्थ , (3) असीत। आज उनका परिवार चार जनों का है। उसमें पत्नी, तृतीय सुपुत्र असीत, उसकी पत्नी याने जोशी जी की बहू और खुद सम्मिलित है। अब उनकी उम्र 64 साल की है और इसी स्थिति में लिखने का काम जारी है।

1.1.4 शिक्षा - दीक्षा और नौकरी :-

जोशी जी की आरंभिक शिक्षा 'खेतीखान' में हुयी। ''खेतीखान में मिड्लि स्कूल तक की ही शिक्षा थी। मिड्लि स्कूल की पढ़ाई के बाद सन 1948 ई. में नैनीताल में पाँच साल रहे।''[7] आर्थिक अभाव के कारण शेष पढ़ाई प्राईवेट परीक्षाएँ देकर पूरी की। पढ़ने की इच्छा में पारिवारिक संघर्ष और आर्थिक विवशता रूकावट बनी थी। स्नातक तक की पढ़ाई जोशी ने पूरी की। 'लखनऊ आर्ट कॉलेज' में पाँच साल का पाठ्यक्रम पूरा करने की इच्छा थी जो सफल नहीं हुई। पहली बार नैनीताल जिले में टनकपुर नामक कस्बें में ट्यूशनों के साथ-साथ कुछ समय अध्यापक की नौकरी की। बाद में लिखने पढ़ने की इच्छा को वास्तविकता देने के लिए बिना त्यागपत्र दिये दिल्ली पहुँचे। 'इंद्रधनुष' प्रतिमान हिंदी डायजेस्ट के अवैतनिक उपसंपादक के रूप में सहृदय संपादक और लिखने की अभिरूचि के सहयोग ने स्वीकार किया। 'इंद्रधनुष' पत्रिका के डगमगाने से उन्होंने 'दैनिक हिंदुस्तान' में सिद्धहस्त पत्रकार के रूप में काम किया। बाद में 'कादंबनी' पत्रिका के सदस्य रूप में रहे। सन 1969 ई. से सन 1993 ई. तक 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' के संपादक रहे। आज मौलिक रचनाएँ लिखने का काम जारी है।

1.1.5 शौक, इच्छाएँ एवं प्रवास :-

जोशी जी के अनेक शौक रहे हैं। जिसमें चित्रकला, अभिनय, लेखन आदि आते हैं। इसके साथ-साथ जोशी जी की भूगोल और इतिहास में रूचि रही है। फिल्म, पेंटीग्ज, संगीत, सुबह की सैर, विदेशों की सैर तथा मौलिक रचना निर्माण करने के शौकिन हैं। उनकी बचपन से कुछ बन दिखाने की इच्छा रही है। जैसे - 'शांतिनिकेतन' और विश्वविद्यालय में विधिवत छात्र के रूप में पढ़ाई करने की इच्छा, लखनऊ आर्ट कॉलेज से पाँच साल का पाठ्यक्रम पूरा करने की इच्छा तथा खूब लिखना, पढ़ना, घूमना आदि के साथ-साथ सही अर्थों में लेखक की जिंदगी जीने की लालसा है। आज वे अपने मौलिक कार्य पर संतुष्ट हैं। मौलिक रचनाओं के निर्माण हेतु वे अपने शौक के लिए बहुत कम समय दे पाते हैं। फिर भी वे अपनी आकांक्षाओं को संजोए रखते हैं। वे एक घुमक्कड़ व्यक्ति हैं। आज तक उन्होंने अमेरिका, नॉर्वे, स्वीडन, डेन्मार्क, जर्मनी, फ्रान्स, ग्रेट ब्रिटन, मॉरिशस आदि देशों की सफल यात्राएँ की हैं।

1.1.6 प्रभाव :-

जोशी जी को लिखने पढ़ने की इच्छा बचपन से ही रही थी। उन्होंने केवल तेरह-चौदह साल की उम्र में लिखना आरंभ किया। लिखने की अदम्य इच्छा को लेकर वे दिल्ली आये थे। वहाँ ''राहुल सांकृत्यायन जी की 'मेरी जीवन यात्रा' किताब पढ़ने में आयी।''[8] इस किताब ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने उसे बार-बार पढ़ा। यह रचना हर बार नया कुछ करने को प्रेरित करती रही और उससे कुछ अनोखे ढंग का अनुभव मिलता रहा। पाठकों के विस्मयित करनेवाले सहयोग से उन्होंने शक्ति पा ली। उन्हें दिल्ली आने पर हिंदी के जैनेंद्रकुमार, राहुल सांकृत्यायन, इलाचंद जोशी, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, शांतिप्रिय द्विवेदी, वृंदावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर आदि ओं के साहित्य से प्रेरणा और प्रत्यक्ष रूप से उनका स्नेह मिलता रहा।

पहाड़ी जन जीवन के प्रभाव के कारण उन्होंने दो आँचलिक उपन्यासों का निर्माण किया। जोशी जी अपनी लेखन प्रेरणा के बारे में लिखते हैं कि, ''अपनी ही अंत: प्रेरणा से, अपने ही जीवन संघर्ष से, अपने ही परिवेश से।''[9]

1.2 कृतित्व :-

हिमांशु जोशी जी ने साहित्य लेखन का प्रारंभ अपने तेरह-चौदह साल की उम्र में किया था। उस समय उन्होंने पहली कविता लिखी। उसके पश्चात सन 1954 ई. में इनके साहित्य का छपना प्रारंभ हुआ और आज तक छपता जा रहा है। इनकी साहित्यिक सभी कृतियाँ बहुचर्चित और मौलिक हैं। उन्हें उनके पारिवारिक संघर्ष, पहाड़ी जन-जीवन का वातावरण, आर्थिक संकट आदि ने लिखने के लिए प्रेरित किया और इन सभी बातों का वर्णन उनकी कृतियों में मिलता है। उन्होंने साहित्य को ही गुरू माना है। इसी कारण वे हर समय साहित्य पढ़ने, लिखने में तत्पर रहते हैं। अब तक प्रकाशित उनकी साहित्यिक कृतियाँ निम्न हैं -

1.2.1 कविता संग्रह :-

सन 1948 ई. में गांधीजी का देहांत हुआ तब जोशी जी ने अपनी पहली कविता लिखी। तब वे सांतवी कक्षा में पढ़ते थे, उम्र लगभग तेरह-चौदह साल की थी। उसके पश्चात् वर्षों तक कविताएँ

लिखते रहे।उनके साहित्यिक जीवन का प्रारंभ काव्य से ही हुआ है। अब तक उनके दो कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं-

(1) अग्निसंभव।

(2) नील नदी का वृक्ष ।

1.2.2 कहानी संग्रह :-

हिमांशु जोशी समकालीन हिंदी साहित्य विधा के अग्रणी कथाकार हैं। जोशी जी की पहली कहानी सन 1954 ई.में छपी थी। अब तक उनके पंद्रह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

(1) अंतत:।

(2) रथचक्र।

(3) मनुष्य-चिह्न।

(4) जलते हुए डैने।

(5) हिमांशु जोशी की विशिष्ट कहानियाँ।

(6) इक्यावन कहानियाँ।

(7) तपस्या तथा अन्य कहानियाँ।

(8) गंधर्व गाथा।

(9) चर्चित कहानियाँ।

(10) श्रेष्ठ आँचलिक कहानियाँ।

(11) इकसठ कहानियाँ।

(12) अंतत: तथा अन्य कहानियाँ।

(13) मनुष्य-चिह्न तथा अन्य कहानियाँ।

(14) जलते हुए डैने तथा अन्य कहानियाँ।

(15) मेरी श्रेष्ठ प्रेम कहानियाँ।

1.2.3 उपन्यास साहित्य :-

'बुराँश फूलते हैं' यह उनका पहला उपन्यास है जो सन 1965 ई. में प्रकाशित हुआ है। अब यही उपन्यास सन 1978 ई.में 'अरण्य' नाम से प्रकाशित हुआ है जो उनकी प्रथम आँचलिक कृति है। उनके लगभग सभी उपन्यास बहुचर्चित हैं। उनका उपन्यास साहित्य इसप्रकार है -

(1) बुराँश फूलते हैं - (अरण्य)।

(2) छाया मत छूना मन।

(3) समय साक्षी है।

(4) कगार की आग।

(5) तुम्हारे लिए ।

(6) महासागर।

(7) सु-राज-(तीन औपन्यासिकाएँ)।

(1) सु-राज, (2) अँधेरा और (3) काँछा

1.2.4 नाटक साहित्य :-

(1) अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ।

(2) कगार की आग तथा अन्य रेडिओ नाटक।

1.2.5 बाल मासिक पत्र :-

(1) मनमोहन - (धारावाहिक रूप से)।

1.2.6 बाल साहित्य :-

(1) तीन तारे।

(2) अग्निसंभव।

(3) हीम का हाथी।

(4) सुबह के सूरज।

(5) संसार की चुनी हुई लोककथाएँ।

(6) बचपन की याद रही कहानियाँ।

(7) जहाँ सूरज नहीं डूबता : नॉर्वे।

(8) भारतरत्न गोविंद वल्लभ पंत।

(9) नन्हें घरौंदे।

(10) चुनी हुई विश्व की जनपद कथाएँ।

1.2.7 यात्रा वर्णन साहित्य :-

(1) यात्राएँ।

(2) आठवाँ सर्ग।

(3) यातना शिबिर में।

(4) सूरज चमके आधी रात।

1.2.8 संकलन साहित्य - (चुनी हुई रचनाओं का संकलन)

(1) उत्तर पर्व।

उत्तर पर्व संकलन में दो उपन्यास, दस कहानियाँ और यात्रा साहित्य संकलित है।

1.2.9 संपादित साहित्य :-

(1) चीड़ के वनों से।

(2) अंधेरे के खिलाफ समझौता नहीं।

(3) श्रेष्ठ समांतर कहानियाँ।

(4) चुनी हुई भारतीय कहानियाँ।

(5) चुनी हुई पच्चीस कहानियाँ।

(6) नो कम्प्रोमाईज अगेंस्ट डार्कनेस (अंग्रेजी)।

1.2.10 अन्य रचनाएँ :-

(1) काला पानी।

(2) भारतरत्न गोविंद वल्लभ पंत।

1.2.11 अनूदित एवं अनुवाद :-

(1) टॉलसटाय की 'THE LONG EXILE' कहानी का हिंदी अनुवाद 'निर्वासन' जो सन 1954 ई. में. 'इंद्रधनुष' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। यह उनकी पहली अनूदित कहानी है।

(2) 'तुम्हारे लिए' उपन्यास का मराठी अनुवाद - 'तुझ्यासाठी' डॉ. पद्‌माकर जोशी द्‌वारा।

(3) कई उपन्यासों और कहानियों के अनुवाद प्राय: पंजाबी, गुजराती, तमील, उर्दू, मलयालम, डोगरी, ओरिसा, मराठी, कोंकणी, कनडा, तेलगू, बंगाली आदि भारतीय भाषाओं में तथा नॉर्वेजियन, जपानी, चीनी, नेपाली, ब्रह्मीज, स्काब आदि विदेशी भाषाओं में हुए हैं।

1.2.12 टी.व्ही. धारावाहिक :-

(1) 'तुम्हारे लिए' उपन्यास के आधार पर इसी ही नाम से प्रसारित धारावाहिक।

1.2.13 फिल्म :-

(1) सुराज - (सु-राज उपन्यास पर आधारित)

1.2.14 पत्रकारिता :-

(1) इंद्रधनुष - उपसंपादक के रूप में।

(2) कादंबनी - सदस्य के रूप में।

(3) साप्ताहिक हिंदुस्तान - संपादक के रूप में।

1.2.15 पुरस्कार :-

(1) अरण्य -उत्तर प्रदेश, हिंदी संस्थान का पुरस्कार ।

(2) हिमांशु जोशी की कहानियाँ -

(1) हिंदी साहित्य अकादमी दिल्ली द्‌वारा पुरस्कृत।

(2) राजभाषा विभाग, बिहार की ओर से गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कृत ।

(3) अरण्य, मनुष्य-चिह्न , छाया मत छूना मन- उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से

पुरस्कृत।

1.2.16 भूषित पदों का विवेचन :-

(1) 'International Forum of Hindi writers-Secretary General'

(2) भारत लेखक संघ - उपाध्यक्ष।

(3) केंद्रीय हिंदी समिति- सदस्य ।

(4) मानव संसाधान विकास मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार द्वारा रचित हिंदी सलाहकार समिति सदस्य ।

(5) फिल्म लेखक संघटन, बंबई -सदस्य ।

(6) साप्ताहिक हिंदुस्तान - सह संपादक तथा विशेष प्रतिनिधि।

(7) कादंबनी पत्रिका - सदस्य ।

(8) इंद्रधनुष पत्रिका - उप संपादक।

1.3 हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यासों का सामान्य परिचय :-

हिमांशु जोशी जी का पहला उपन्यास सन 1965 ई. में प्रकाशित हुआ -'बुराँश फुलते' हैं' जो आगे 'अरण्य' नाम से पुन: प्रकाशित हुआ। सन 1965 ई. में से आज तक उनके सात उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। इनमें से दो ही उपन्यास आँचलिक है - (1) अरण्य और, (2) कगार की आग।

1.3.1 अरण्य :-

उपन्यास का प्रारंभ 'खेतीखान' के 'कनाली' नामक गाँव के अंचल वर्णन से होता है। उसमें नदी, अव्यवस्थित और विरान बस्ती तथा गाँव की विशेषताओं का समावेश है। 'कनाली' ब्राह्मणों का गाँव है। धन कमाने के लिए वे अलग-अलग धंदे करते हैं जिसमें हमेशा असफल रहते हैं। यहाँ की औरतें

कड़ी मेहनत करती हैं। मर्द अपने में ही दंग रहते हैं। गाँव में माधव पधान नामक एक वृद्ध हैं, जो कम उम्र में विवाह करने की पूर्वज परंपरा का पालन करते हैं। उनके पाँच कन्या और तीन पुत्र हैं। उनके बड़े बेटे बिस्सू की शादी रूखलि के साथ होती है। शादी के बाद दो साल में ही बिस्सू की मृत्यु होती है। अत: रूखलि विधवा हो जाती है। हरसू उनका दूसरा बेटा है, जो अत्तर-शुल्फई पीता है। जुआ खेलता है। किसी छोटी जाति की औरत के चक्कर में पड़ता है। फिर पास ही के लोहारों के गाँव में उसी के साथ अपना घर बसा लेता है। बंसी उनका तीसरा बेटा है जो बाप पर गया है। रध्धू , नीली, सुनिया माधव पधान की बेटियाँ हैं। उपन्यास की नायिका कावेरी माधव पधान की दिवंगता बहन की इकलौती संतान है। अत: वह उनकी भाँजी है। पधानी उसका द्वेष करती रहती है। कावेरी के माँ-बाप न होने के कारण तथा सगेवाले भी न के समान होने के कारण वह हमेशा उदास रहती है।

हिरदैराम एक पुरोहित है, जिन्हें लोग भगवान मानते हैं। उनकी दो संताने हैं - मानिक और सुकिया। यह उनकी इच्छा होती है कि मानिक भी पुरोहित का काम करें लेकिन मानिक तिलस्मी और जासूसी साहित्य पढ़ता है। उसने तीन साल प्रथमा की तीन परीक्षाएँ दी हैं लेकिन उसमें असफल रहता है। उसके चेहरे पर डाकू बहराम के काले नकाब दिखते हैं। वह कावेरी को प्यार से 'कव्वी' 'कलमुखी' कहता है। कुछ दिन के लिए मानिक लापता होता है और रूआंसा होकर वापस भी आता है। फिर मानिक चंपावत की पाठशाला में जाने लगता है। उसमें थोड़ा परिवर्तन आता है, लेकिन बुरी आदतें उसका साथ नहीं छोड़ती हैं। मानिक की शरारतें हर दिन बढ़ती रहती हैं। वह आर्थिक विपन्नता के कारण घर छोड़कर चला जाता है। जाते-जाते कावेरी के हाथ की चाँद की धागली माँगकर ले जाता है। कावेरी भी विवशता से दे देती है। फिर मानिक अपने पिता हिरदैराम की मृत्यु के बाद ही घर आता है। उसे अपने घर की स्थिति पहले से भी ज्यादा बिगड़ गयी दिखाई देती है। इसी कारण वह गाँजा पीता है, जुआ खेलता है। जुअे में सब कुछ हरा देता है। माँ के पास संदूक की चाबी माँगता है लेकिन माँ की इन्कार से गुस्सा आकर उसे धकेल देता है। जिससे माँ की कलाई मुड़ जाती है। इसी कारण कावेरी उसे फटकारती है। तो मानिक रातभर रोता रहता है और सुबह फिर घर छोड़कर भाग जाता है।

इधर मानिक की माँ के पास सरकारी खाना-पूर्ति के लिए पैसे नहीं होते हैं। वह अपनी बेटी सुक्की की चांदी की झुमकेवाली सुतली को निकाल देती है और सुक्की को ही माधव पधान के पास देने हेतु भेजती है। सुक्की से माधव पधान उस सुतली के बारे में जानकारी हासिल करते हैं। सुक्की घर वापस चली

जाती है। कुछ समय बाद माधव पधान अपनी बेटी को सुक्की को बुलाने के लिए भेजते हैं। जिससे मानिक की माँ को लगता है कि उससे काम नहीं चलता फिर पैसे लगते होंगें। जब वह अपने पास के रिश्तेदार देवर पुरूषोत्तम के पास कलशियाँ गिरवी रखकर पैसे भेजती है तब माधव पधान पैसे और सुतली वापस लौटाकर उनकी सारी सरकारी रकम खुद भरते हैं।

एक दिन रूखलि के भाई की शादी का न्योता आता है तब उसके साथ कौन जाए, इस बात को लेकर पधान और पत्नी में झगड़ा होता है। इसी कारण पधान बाहर निकल जाते हैं। रात देर तक वे घर नहीं आते हैं। फिर उन्हें ढूँढने का प्रयास जारी रहता है। अनेक शंकाएँ कही जाती है। रात के अँधेरे में लोग उन्हें ढूँढने निकलते हैं। पधानी कुँवरदेव शिकारी को भेजती है। अंधेरे में वें पधान-काका पधान-काका पुकारते हैं। तभी उन्हें एक अस्पष्ट मनुष्याकृति नजर आती है। वे धीरज बाँधकर उसे पहचानने का प्रयास करते हैं लेकिन अंत में जंगली जानवर समझकर कुँवरदेव गोली दाग देते हैं। वह गोली हिरदैराम की पत्नी सुकिया की माँ को लगती है जो भूख और आर्थिक विपन्नता के कारण पागल बनकर, हाथ में कुदाली लेकर रात के अँधेरे में गई थी।

पुरूषोत्तम को अपनी रिश्तेदार हिरदैराम की पत्नी की हालत का पता लगता है, तो वह कुँवरदेव को फाँसी के तख्ते तक पहुँचाने की धमकी देता है। कुँवरदेव उसके पास अपने जीवन की भीख माँगता है। वह अपनी जान बचाने के लिए पुरूषोत्तम को रिश्वत हेतु अपनी पत्नी की नथ लाकर देता है। पुरूषोत्तम बुढ़िया की दवा पानी का खर्चा भी नहीं देता। वह उसकी गढ़ी संपत्ती हड़प लेना चाहता है। बुढ़िया मानिक-मानिक कहकर चिल्लाती है और रातभर रोती रहती है। कुँवरदेव जब उसका इलाज करवाता है तो पुरूषोत्तम उसे वैद्य तथा दवा पानी हटाने को कहता है। एक दिन सुबह बुढ़िया मर जाती है। बुढ़िया का क्रियाकर्म पुरूषोत्तम कर देता है। बुढ़िया के मरने से सारे गाँववालों को दुख होता है और जिससे कावेरी को अपनी दिवंगता माँ की याद आती है। पुरूषोत्तम रातभर क्रियाकर्म के खर्चे को लेकर सोचता रहता है और बुढ़िया का वारिस बनकर जमीन, जायदाद हड़प करना चाहता है। सुकिया को किसी के पल्ले बाँध देने का विचार भी करता है। खर्चा देने की जिम्मेदारी कुँवरदेव की है ऐसा समझकर वह अपने बेटे दीना को उसके पास भेजता है। वहाँ जाते ही उसे कुँवरदेव ने फाँसी और लोकलज्जा के भय से आत्महत्या की दिखाई देती है।

माधव पधान का कहीं अता-पता नहीं मिलता है। इधर सरकार की जंगलात से देवदार के

पेड़ काटकर चोरी करने के इल्ज़ाम में पटवारी हथकड़ियाँ लगाकर उन्हें दो दिन हवालात में भूखा बंद करता है। गुमानी थोकदार किसी दूसरे गाँव से आते वक्त उन्हें देखता है और यह बात गाँव में कह देता है। जिससे तरह-तरह की शंकाएँ उत्पन्न होती है। पधान को पेड़ काटने का आदेश पटवारी ने ही दिया है। सरकारी जाँच-पड़ताल के कारण अपने को बचाने हेतु निरीह पधान पर आरोप लगाता है। पटवारी पेशकार को रूपए, बकरी तथा एक फूल जैसी औरत का एक रात संग देकर अपनी बाजू निपटा लेता है। पधान सत्यवादी है। इसी कारण पटवारी सजा के दिनों में उसके परिवार की देखभाल करने की कसम खाता है और झूठ बोलने के लिए मजबूर करता है। देवदार वृक्ष की चोरी के सिलसिले में अनेक भोले-भाले लोगों के साथ औरतों की मारपीट और फजीहत होती है। अदालत में सभी स्वार्थ हेतु पधान के विरोध में बयान देते हैं। दूसरे दिन पधान घरवालों की इज्जत बचाने के लिए गुनाह कबूल करता है। उसे दो सौ रूपए जुर्माने के साथ-साथ बयालीस माह की सजा होती है।

पटवारी सरकार को हिसाब देने में असमर्थ रहता है तब वह पुरूषोत्तम को अपने बाजू में लेता है। पुरूषोत्तम सभी गाँववालों को अपराधी ठहराता है। इसी कारण मेहनताना इकट्ठा कर सरकार को देने की सलाह देता है। आधा हिस्सा कुँवरदेव के घरवाले अपने खेत पुरूषोत्तम के पास गिरवी रखकर देते हैं। बाकी सभी अपनी गाय, बकरी, चाँदी, बरतन बेचकर मेहनताना देते हैं। पटवारी हजार रूपए से कम नहीं लेना चाहता है फिर भी पुरूषोत्तम उसे आठ सौ रूपए देता है। उसमें से दस रूपए की हरियाली उसे मिलती है। इतने पर वह संतुष्ट नहीं है। वह सुकिया से धन गढ़ने की जगह का राज निकालने का प्रयास करता है और सुकिया से कही जगहपर रात को चुपके-चुपके खुदाई करता है लेकिन उसमें असफल रहता है। एक दिन पधान की चिठ्ठी लेकर नया चिठ्ठीरसैन आता है तो लोग उसे पहचान नहीं पाते हैं। लोगों के कहने पर चिठ्ठी पढ़कर सुनाता है जिसमें माधव पधान गाँववालों को शुभाशिष देने के साथ-साथ कावेरी के ब्याह का जिक्र भी करते हैं। चिठ्ठी सुनने के बाद सभी को दुख होता है।

कावेरी को चिठ्ठीरसैन को देख मानिक की याद आती है, क्योंकि वह मानिक की तरह दिखता और बोलता भी है। हर समय चिठ्ठीरसैन आनेपर वह उसकी ओर बार-बार देखती है। इससे उसकी शादी की बात सामने आती है। उसे पास के गाँव के ठेकेदार से रिश्ता आता है। ठेकेदार बूढ़ा है और उसकी दो शादियाँ हुई हैं। संतान प्राप्ति हेतु वह कावेरी से शादी करना चाहता है, लेकिन कावेरी को यह शादी पसंद नहीं होती है। इसी कारण वह अपने पूराने घर चली जाती है। वह वहाँ ही रहना चाहती है। एक बूढ़ी औरत

का साया उसके सिर पर रहता है। कावेरी दूसरों के खेतों पर काम करती है। एक दिन रूखलि उसे मिलने आती है और घर का सारा हाल बता देती है। दूसरे दिन रूखलि के चले जाने के बाद कावेरी सोचती रहती है और फिर कनाली अपनी मामी के पास चली आती है। मामा के परिवारवालों को सुखी बनाने के लिए वह बूढ़े ठेकेदार से शादी करती है।

इधर मानिक काफी बदल जाता है। पलटन में नौकरी करता है और बुरी आदतों से दूर रहता है। शादी करना नहीं चाहता है। कावेरी को सुखी रहने का संदेशा देकर फिर चला जाता है। एक दिन कावेरी कोमल शिशु को जन्म देती है और ठेकेदार का घर खुशियों से भर जाता है लेकिन ठेकेदारी में हजारों का घाटा आने के कारण ठेकेदार चिंतीत रहता है।

मानिक फिर पलटन छोड़ घर आता है और कावेरी को अपनी परेशानियाँ तथा हालत और जमादारों द्वारा किस प्रकार फँसाया गया आदि सारी बातें बताता है। कुछ दिन बाद फिर पलटन में भरती होने के लिए हवालदार रूंगरूटों को आमंत्रित करते हैं। तब मानिक उसमें दुबारा भरती होता है। वह लद्दाख में सड़क बनाने के काम में लग जाता है। हर माह वह कावेरी को खत और पैसे भेजता है। जब कृपाल वहाँ की बमबारी की खबर देता है तो कावेरी स्तब्ध रहती है। उस युद्ध में हजारो लोग मारे जाते हैं जिसमें मानिक भी होता है। मानिक के खत और पैसे आना बंद होता है तब कावेरी मंदिर जाकर भगवान को हर रोज फूल चढ़ाकर, मन्नतें माँगकर मानिक की प्रतिक्षा करती रहती है।

1.3.2 कगार की आग :-

'कगार की आग' इस उपन्यास में अल्मोड़ा के पर्वतीय अंचल के 'लर्खौन' गाँव की कथा-व्यथा का चित्रण हुआ है। इसमें नायक पिरमा और नायिका गोमती प्रमुख पात्र है जो पति-पत्नी है।

गोमती की माँ जिसने अपने यौवन काल में अनेक समस्याओं का सामना किया है। उसकी उम्र लगभग सतरह- अठारह की थी जब उसकी शादी होती है। शादी के आठ-नौं वर्ष बाद एक दिन उसकी विधवा ननद पेट में किसी का बच्चा रहने के कारण खुबानी की डाल पर रस्सी बाँधकर आत्महत्या करती है। इसका इल्ज़ाम उस पर लगाया जाता है। जाँच पड़ताल हेतु पटवारी और पेशकार आते हैं। उसके रूप को देख मोहित होते हैं। उसे अकेले में पूछताछ के बहाने लेकर भोग लिया जाता है। निर्दोष होने के बावजूद भी वह

पेशकार और पटवारी से लूटती रहती है।

अब वह विधवा वृद्धा है। उसे अपनी बेटी गोमती की चिंता लगी रहती है। अपने पर बीती समस्याएँ बेटी के नसीब न हो इसी कारण चिंतीत रहती है। दूसरों के खेतों पर काम कर अपनी रोजी रोटी कमाती है। अर्थाभाव तथा निम्नजाति के कारण उनके नसीब एक जून की रोटी भी नहीं होती है। ऐसी हालत में वह अपनी बेटी की कच्ची उम्र में ही शादी करती है। कुछ दिनों बाद एक दिन किसी कारणवश गोमती के पति की मृत्यु होती है। अत: वह विधवा होती है। बूढ़ी माँ को जवान लड़की का यूँ घर रहना पसंद नहीं आता है। वह लधौंन के लोहार के लड़के 'पिरमा' से उसकी शादी करती है। पिरमा एक भोला-भाला आदमी है जो हमेशा निस्तेज रहता है। गाँजा-अत्तर पीता है। अपने कलिया कक्का की ही बाते सुनता है। पिरमा की ऐसी हालत बचपन में कलिया के ठूँस लगाने से ही हो जाती है। बँटवारे के समय कलिया उसे कुछ नहीं देते हैं। पिरमा से गोमती को बेटा होता है, जिसका नाम है - 'कन्नु'। शादी के पूर्व पिरमा पर तथा शादी के बाद दोनों पर कलिया, तेजुआ, पटवारी तथा पेशकार से अन्याय, अत्याचार होते रहते हैं। कलिया और तेजुआ दोनों बाप बेटे की बुरी नजर गोमती पर होती है। एक दिन नाली का पानी पिरमा के घर छोड़ देने में तेजुआ और कलिया सफल होते हैं, लेकिन गोमती की सावधानी के कारण थोड़ा -बहुत नुकसान होता है। ऐसी अनेक काली करतूतें तथा कपटनीति के कारण गोमती परेशान रहती है। गोमती यह सब जानकर इसका जिक्र वह पति से करती है लेकिन पति की नामर्दानगी के कारण तेजुआ और कलिया उसका फायदा लेते हैं। पिरमा हर समय अबोध रहता है। वे हमेशा गोमती और पिरमा को किसी-न-किसी कारण को लेकर पीटते रहते हैं।

इनकी पिटाई के कारण गोमती बार-बार मायके चली जाती है, जहाँ उसकी वृद्धा माँ रहती है। वृद्ध माँ उसे वापस लौट जाने की सलाह देती है। मरने से पहले अपनी बेटी को वह खुश देखना चाहती है। अपनी जमीन भी उसके नाम करा देना चाहती है, लेकिन वह भी उसके पति के जीते-जी हरकिसन पधान अपने नाम करवा लेता है। इसी कारण उसे दुबारा मारपीट होने के बाद ससुराल न जाने की शर्त पर लधौंन पहुँचाने जाती है।

इधर गाँव में अनेक चर्चाएँ होती रहती हैं। लोकलाज का खयाल रखने हेतु गोमती को पहुँचाने वह खुद आती है। वहाँ जंगल के लीसें से भरे कनस्तरों की चोरी के इल्ज़ाम में, पटवारी पिरमा को हथकड़ियाँ लगाये ले जाता है। जिसकी खबर उन्हें कन्नु द्वारा मिलती है। इसमें तेजुआ का हाथ होता है। इस

अन्याय के प्रति विरोध करनेवाले सिर्फ खिमुराम ही है। खिमुराम और कलिया में पिरमा के मामले को लेकर झगड़ा होता है। जिसे गाँव के हरिराम बीच में निपटा देते हैं।

गोमती का देवर देवराम पलटन में हैं। गोमती के पास अपने देवर देवराम को खत लिखने के लिए भी पैसे नहीं है। इसीकारण वह अपनी कटोरी को बेच थोकदार से खत लिखवाती है। एक दिन तेजुआ और कलिया पिरमा को किसी कारणवश मारते हैं। तभी पलटन से छुट्टि पर आया देवराम कलिया तथा तेजुआ को समझाता है। बदले की भावना के बीच इज्जत रूकावट बनती है। एक ही हफ्ते में देवराम को युद्ध पर जाने हेतु पलटन में हाजिर होना पड़ता है। जाते-जाते वह गाँव के सरपंच, थोकदार, पटवारी और पेशकार को अपने बड़े भाई पिरमा की ओर ध्यान देने के लिए कहता है। तेजुआ और कलिया की शिकायत वह अपनी ओर से सरकार को भी करता है। जिंदगी उसका साथ बीच में ही तोड़ देती है। युद्ध में देवराम मारा जाता है। गोमती उसके सारे क्रियाकर्म को कर्जा निकालकर पूरा करती है। देवराम की मृत्यु के बाद तेजुआ गोमती को अपनी रखैल बनाने के लिए घसीटकर ले जाता है। उस पर बलात्कार करने का प्रयत्न करता है जो गोमती जलता छलिया उसके मुँह मारकर तथा उसका गला दबाकर असफल करती है। वह लधौंन छोड़कर भाग जाती है। वह अपना मुँह नोच-नोचकर खराब करना चाहती है।उसके सुंदर रूप के कारण ही उस पर अनेक गहरे अन्याय होते रहते हैं।

नदी पर आत्महत्या करने गयी गोमती को कन्नु की याद आने पर पास ही के घर के टूटे दरवाजे पर खंबे जैसी खड़ी रहती है। उस रात पनचक्की पर नाज पसीने खुशाल आता है लेकिन विवस्त्र खडी गोमती को भुतनी समझकर घबरा जाता है। बाद में वह उसकी व्यथा-कथा सुनता है और उसे अपनी तीसरी पत्नी बनाने हेतु 'नरसिंह डाँड़ा' ले जाता है। कलिया और तेजुआ को पता चलते ही वे पाँच-छ: जवान छोकरों को साथ लिए गोमती को लाने जाते हैं। वहाँ कुछ हाथापाई होने के बाद पंचायत के सामने खुशाल चार सौं रूपए धड़ी भरकर गोमती को अपने पास रख लेता है। गोमती के धड़ी भरने के मिले चार सौं रूपए और सरकार की ओर से देवराम के आये रूपयों को कलिया बीच में ही खा जाता है। खुशाल जो पंडित बुधानंद की तिजारथ पर पला हुआ है। तिजारथ का पैसा वह गोमती पर निछावर करता है। निसंतान होने के कारण वह उससे संतान की आशा करता है। खिमुराम से गोमती को पता चलता है, कि तेजुआ चोरी-चोरी शराब के अड्डे चलाता है और कच्ची बेचता है। इसकी रिपोर्ट पेशकार को देने से कलिया और तेजुआ को उम्र कैद की सजा हो सकती है। पेशकार और खुशाल की जान पहचान होती है। इसी कारण बदले की भावना

से गोमती खुशाल को रिपोर्ट देने के लिए कहती है। इससे खुशाल को गुस्सा आता है और उस पर कोसता रहता है। गोमती परेशान रहती है। गोमती को बार-बार पिरमा और कन्नु की याद आती है। वह खुशाल से कन्नु को अपने पास बुला लेने की इजाजत माँगती हैं जो नहीं मिलती।

खुशाल की पहली दो पत्नियाँ उसका द्वेष करती रहती हैं। एक दिन खुशाल गोमती को लोहाघाट के मेले में ले जाता है। वहाँ गोमती को पता चलता है कि पिरमा नजदीक ही के जेल में बंद है। तो वह चुपके से मिलने जाती है। इस बात का पता खुशाल को लगता है। उसकी पहली दो पत्नियाँ उसे गोमती की हरकतें बताती हैं। इसी कारण गोमती को मार पड़ती है। सौंति उसके गहने उतारकर तथा चाबियाँ छीनकर उसे काम पर लगा देती हैं। गोमती खुशाल से भी तंग आती है।

एक दिन गोमती खुशाल के सवालों का जवाब देते समय हमेशा के लिए पिरमा और कन्नु के पास जाने की इच्छा प्रकट करती है। उस समय खुशाल कहता है कि धड़ी भरने के चार सौं रुपए लौटाकर ही वह पिरमा के पास जा सकती है। एक दिन गोमती अपनी माँ को देखने जाती है। खुशाल उसे शाम तक वापस आने के लिए कहता है। वृद्धा बीमार माँ को मिलने के बाद वह नरसिंह डाँडा को लौट जाने के लिए जल्दी निकलती है। वहाँ से लधौंन जाने की इच्छा होते हुए भी वह नहीं जाती है। उसका स्वाभिमान जागृत होता है और वह बीस -बीसी (चार सौं रूपए) कमाने के लिए पहाड़ियों में कम मजदूरी पर सघन बन काटकर नये फार्म बनाने के काम में लग जाती है। इधर खुशाल गोमती के लापता होने के पश्चात् उसे बहुत ढूँढता है और न मिलने पर, मर गई समझकर तिरपन करता है। गोमती कड़ी मेहनत करती है। इसीलिए वहाँ का ठेकेदार या फर्मवाला लाला तिरपनलाल उसकी मजदूरी मर्दों के बराबर करता है। लाला उसकी सुंदरता पर मर मिटता है। वह उसे अपनी पत्नी की माफिक रखना चाहता है। गोमती इन्कार करती है। बढ़ती गर्मियों के कारण सभी मजदूर अपना अपना हिसाब लेकर घर जाने की तैयारी करते हैं। गोमती को लाला ठहरने के लिए कहता है लेकिन वह चली जाती है। अपने स्वाभिमान को जिंदा रखने के लिए बीच के मुकाम से ही लौट आती है। लाला के पास काम माँगती है। इधर गाँव में बाकी लोग (मजदूर) कहते हैं कि गोमती को हाथी ने मार डाला।

एक बरस काम के बदले चार सौं रूपए की आमदनी पर गोमती वहाँ रह जाती है। साथ-साथ लाला की इच्छा भी पूरी करती है। एक बरस के बाद बीस-बीसी लेकर वह खुशाल के घर रात में ही

जाती है। उसे जीवित देखकर वह भौंचक्का हो जाता है। गोमती उसके मुँह पर बीस-बीसी फेंकती है और लधौंन चल पड़ती है। इधर कलिया पिरमा को मार देता है और आत्महत्या दिखाने के लिए उसे उसकी झोपड़ी में लाकर, उस पर तेल छिड़ककर जला देता है। आग के कारण कन्नु भाग जाता है। इसी कारण कलिया के पंजे से बच निकलता है।

खिमुराम पिरमा के क्रियाकर्म के लिए सर मुँडवायें ज्योस्यूड़ा नदी पर आते हैं। तब उन्हें वहाँ गोमती मिलती है। खिमुराम उसे पिरमा की मृत्यु की खबर देते हैं। गोमती स्तब्ध रहती है। इतने में कन्नु आकर उसे छिपकता है और लगातार रोता रहता है। बदले की भावना से गोमती कलिया के घर के सामने जाकर जोर-जोर से पुकारकर औरत जात की कसम खाती है और पिरमा को जिस प्रकार जलाया ठीक उसी प्रकार उसे जलाने की धमकी देती है। फिर कन्नु के साथ वह लधौंन छोड़ देती है। इसीप्रकार जोशी जी ने दोनों उपन्यासों में पर्वतीय लोगों की व्यथा-कथा को स्पष्ट रूप से उजागर किया है।

निष्कर्ष :-

हिमांशु जोशी जी का जन्म पर्वतीय अंचल प्रदेश में हुआ है। पर्वतीय जन-जीवन के साथ ही उन्होंने अपना बचपन बिताया है। वहाँ के परिवेश ने उन्हें लिखने के लिए प्रेरणा दी है। पिताजी स्वातंत्र्य सेनानी होने के कारण उनकी जेल यात्राएँ होती रहती हैं। इसी कारण परिवार पर मुसीबतें आती रहती हैं। गांधीजी के तत्वों का पालन करते-करते पिताजी का देहांत हो जाता है और वे सात साल की उम्र में ही पितृ-प्रेम से वंचित होते हैं। पितृ-प्रेम के साथ-साथ वे भ्रातृ-प्रेम से भी वंचित है। उनकी पढ़ाई, पारिवारिक संघर्ष और आर्थिक विपन्नावस्था के कारण बीच में ही रूक जाती है। वे बचपन की कुछ बन दिखाने की इच्छा को लेकर दिल्ली जाते हैं। वहाँ अनेक विद्वानों का स्नेह मिलता है। जोशी जी के तीन पुत्र है अमीत, सिद्धार्थ और असीत। जिनमें से दो नॉर्वे में अपना सांसारिक जीवन बीता रहे हैं। आज दिल्ली में वे पत्नी और तृतीय सुपुत्र असीत तथा बहू के साथ रहते हैं। पिताजी की मृत्यु के बाद माता तुलसीदेवी उनकी चालीस साल तक सेवा करती है। जोशी जी को बचपन से बहुत शौक है लेकिन आज वे साहित्य-लेखन में इतने मग्न हैं कि बाकी शौक के लिए समय नहीं दे पाते हैं। वे पर्वतीय अंचल के साथ-साथ पं. राहुल सांकृत्यायन जी की 'मेरी जीवन यात्रा' किताब से प्रभावित हैं।

उन्होंने तेरह-चौदह साल की उम्र से साहित्य निर्माण का कार्य शुरू किया है। जोशी जी सन

1948 ई. से कविता, सन 1954 ई. से कहानी और सन 1965 ई. से उपन्यास लिखने लगे हैं। अब तक उनके पंद्रह कहानी संग्रह, सात उपन्यास, दो कविता संग्रह, चार यात्रावर्णन तथा दस बालोपयोगी रचनाएँ और कुछ अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। शिक्षा इंटरमीडियट तक हो गई है। कई वर्ष टनकपुर में अध्यापक की नौकरी की और उसके साथ-साथ ट्यूशन भी लेते थे। बाद में सन 1969 ई. तक 'इंद्रधनुष्य' नामक पत्रिका के उपसंपादक रहे हैं। सन 1969 ई. से 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' के संपादक बने हैं। सन 1993 ई. में वहाँ त्यागपत्र दिया। उनके सात उपन्यासों में से दो ही उपन्यास आँचलिक हैं (1) अरण्य, और (2) कगार की आग।

'अरण्य' उनका पहला और आँचलिक उपन्यास है। इसमें उन्होंने पर्वतीय लोगों की व्यथा, वेदना, पीड़ा का चित्रण किया है। सामाजिक पाखण्ड तथा राजनीतिक षड्यंत्रो पर ताना मारा है। इसके प्रमुख पात्र कावेरी और मानिक हैं। उनके माध्यम से लेखक ने आर्थिक विपन्नता तथा संघर्षों से लड़ते रहने की शक्ति का प्रदर्शन किया है। आदमी की जिंदगी को कथा का आधार बनाया है। नेता, अफसर, सरकारी योजना का अभाव आदि राजनीतिक साजिशों को उजागर किया है। परंपरा, रूढ़िवादी जीवन जीनेवाले पर्वतीय अंचल के लोगों की सभी स्थितियों का वर्णन इसमें मिलता है। पारिवारिक जीवन, अनमेल विवाह, बहु विवाह तथा नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण इसमें देखने मिलता है। सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले पात्र भी इसमें सम्मिलित हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में भी सामंती व्यवस्था थी। आज भी वह किस प्रकार जीवित है यह दिखाने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के माध्यम से जोशीजी ने सरकारी न्यायव्यवस्था, सरकारी मदद, योजनाएँ, भ्रष्ट पुलिस, पटवारी का दबाव आदि पर करारा व्यंग्य किया है। देहात के विभिन्न वर्गों में आपसी संबंध, जमींदार, महाजन, पंडित, पुजारी आदि शोषक तथा किसान, मजदूर, मजबूर नारी का शोषण, अंधविश्वास, राजनीति का समाज पर पड़नेवाला प्रभाव आदि का भी चित्रण इसमें मिलता है। यह जोशी जी की पहली आँचलिक कृति है और पर्वतीय अंचल-समाज का हू-ब-हू चित्रण इसमें है।

द्वितीय आँचलिक उपन्यास 'कगार की आग' में अल्मोड़ा के पर्वतीय अंचल के लखौंन गाँव की व्यथा-कथा चित्रित है। गोमती के माध्यम से सामंती समाज व्यवस्था में अमानवीय अत्याचार आज भी कैसे होते हैं इसका वर्णन मिलता है। सरकारी अफसरों से लेकर गाँव के पटवारी, पेशकार, सिपाही, कलिया तथा तेजुआ जैसे भ्रष्ट नीति के वंशजों का चित्रण इसमें मिलता है। अवैध धंदे, हरकिसन पधान और लाला

तिरपनलाल तथा खुशाल के माध्यम से वासना तथा स्वार्थ के खोखलेपन का दर्शन होता है। गरीबी, अत्याचार, शोषण, शोषक आदि का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। संघर्ष कथानक के शुरूआत से अंत तक लगातार चलता रहा है। यह उपन्यास नायिका प्रधान होने के साथ-साथ चरित्र प्रधान भी है। इससे स्पष्ट होता है कि जोशी जी ने पर्वतीय अंचल का बहुत गहराई से अध्ययन किया है। इसमें वहाँ की दरिद्रतापूर्ण स्थिति, विवाह पद्धति, शोषण, द्वेष, परंपराप्रिय समाज जीवन, शोक, कलह, जीवन का व्यापार, विभिन्न समस्याएँ, स्वार्थी प्रवृत्ति, उत्सव, त्यौहार, अज्ञान, अंधविश्वास, उच्च-मध्य-निम्नवर्गीय स्थिति, स्वाभिमान, जिद्द, वात्सल्य, विवशता, बदले की भावना, व्यसनाधिनता, आत्मीयता, भ्रष्टाचार, राजनीति, युद्ध, रिश्वत आदि का चित्रण मिलता है। इसके पात्र खेती, गाय, बकरी पालना, बर्तन बनाना, जंगल में घूमकर अत्तर गाँजा की सेलियाँ इकठ्ठा करते हैं और बेचकर जीविका चलाते हैं। उदरपूर्ति के लिए एक जगह से दूसरी जगह स्थलांतर करते हैं और चोरी-चोरी शराब बेचने का काम करते हैं। पात्रों की परिवर्तित मनस्थिति का भी अंकन इसमें है। इसका मतलब है कि लेखक ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर भी वहाँ के लोगों के अंतर्मन की बातों को भी उजागर करने का प्रयत्न किया है जो सफलता की सीढ़ियाँ पार कर गया है।

: संदर्भ - संकेत :

(1) हिमांशु जोशी - 'मेरे सरोकार', हस्तलिखित - पृ.2

(2) हिमांशु जोशी - मेरा बचपन, हस्तलिखित - पृ.1

(3) हिमांशु जोशी - 'मेरे सरोकार', हस्तलिखित - पृ.3

(4) हिमांशु जोशी - मेरा बचपन, हस्तलिखित - पृ.1

(5) हिमांशु जोशी - 'कथा तीरे', इकसठ कहानियाँ - पृ.7

(6) हिमांशु जोशी - मेरा बचपन, हस्तलिखित - पृ.1

(7) हिमांशु जोशी - मेरा बचपन, हस्तलिखित - पृ.2

(8) हिमांशु जोशी - 'मेरे सरोकार', हस्तलिखित - पृ.5

(9) कथाबिंब -1995 - पृ.35

****